International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

इक्कीसवी सदी में हिंदी के सामने चुनौतियाँ

डॉ. रंजना आप्पासाहेब कमलाकर
(हिंदी विभाग) र. भा. माडखोलकर महाविद्यालय, चंदगड
Corresponding Author - डॉ. रंजना आप्पासाहेब कमलाकर
DOI - 10.5281/zenodo.10958116

भारत जैसे संस्कृति सम्पन्न देश की विरासत का पत्ता हमें भाषा ग्रंथो से प्राप्त होता है| हिंदी आज पूरे विश्व की संपर्क की भाषा बन गयी है| हिंदी हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की नवजागरण सत्ता को चुनौती देनेवाली आत्मनिर्भर की भाषा है| आज हिंदी का साहित्य जीवन जीने की सुगमता के निर्देशों से भरा पडा है| इस भाषा के साहित्य ने आजादी की लडाई के जमाने में पूरे देशवासियों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के मकसद को सही-सही बताने में कामयाबी हासिल की है| मगर बडे खेद के साथ कहना पडता है कि आजादी मिलते ही लोकतंत्रीय सरकार और उसके नौकरशाहों ने इसके सामने कई सवाल खडे कर दिए मगर ये सवालों का हल किसी के पास नहीं है सो इस सदी में हिंदी के सामने चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ मिल रही हैं|

हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता होते हुए भी इक्कीसवी सदी में हिंदी के सामने सबसे बडी चुनौती यही है कि उसे भारतीय मानस की, भारतीय सोच को फिर से नेतृत्व प्रदान करना है| जो कार्य भक्तिकाल में कबीर ने आधुनिक काल में प्रेमचंद किया | केवल बहुसंख्यक लोगों व्दारा बोलने- समझने की वजह से हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं मिला बल्की जन-मन में मानवीय गरिमा की भावना का सिंचन करने की सोच इस भाषा में है | इसलिए हिंदी भाषा बोलने में सुमधूर सुनने में कोमल और अपनापन रखने वाली भाषा है | स्वाधीनता संग्राम में संपर्क भाषा बनने की वजह से भारतीय नवजागरण-काल में राजा राममोहन राय ने स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, पंडित नेहरु आदि महान विभूतीयों ने हिंदी भाषा की क्षमता, उपयोगिता, महत्व, सांस्कृतिक कार्य को पहचाना और उसे राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था | सोचने की बात यह है कि इन राष्ट्रनायकों में कोई भी साहित्यकार या मसिजीवी नहीं था लेकीन फिर भी उन्होंने भाषा और साहित्य के महत्व को और उसे अपने मिशन के साधन के रुप में आगे बढाया | उन्होंने भाषा और साहित्य को साध्य नहीं, तो साधन के रुप में आगे बढाया | हमें यह बात याद रखना चाहिए कि भाषा एक साधन है, साध्य है, जन कल्याण के विकास का मूलमंत्र है | देश के हर नागरीक को विकास करने का समान अवसर मिले |

26 जनवरी 1950 को भारत एक गणराज बना और भारत का संविधान लागू हुआ | संविधान में कहा गया था कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी 15 वर्ष की अवधि में अंग्रेजी के स्थान पर, भारत की राजभाषा होगी | इस बात पर जोर दिया गया था कि सरकार हिंदी का विकास करे, ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति स्वातंत्र का माध्यम बन सके |

आज की यह इक्कीसवी सदी बडी तेज रफ्तार की सदी है | आज अधिकांश काम यंत्र करते है और उन्हें चलानेवाला क्रमश: यंत्रवत या रोबोट बन जाते हैं, हिंदी की प्राचीन उपलब्धियाँ, यंत्र-मस्तिष्को से मिट रही है | अधुनातन उपब्धियों की ओर भारत को अग्रसर होना होगा, अपने संपूर्ण समाज को साथ ले चलना होगा और हिंदी को उसमें अपनी भाषा और साहित्य के मध्यम से योगदान करना होगा |

विश्व की एक मौलिक भाषा के रुप में उभरने के लिए हिंदी की मनोधारणा में परिवर्तन और गतिशील प्रयत्नों की आवश्यकता है | हिंदी के प्रति सजग आत्मसन्मान की संवेदना महत्वपूर्ण है | इस पूर्ति के हेतू अहिंदी तथा हिंदी समझनेवाले लोगों के साथ हिंदी में ही संभाषण करना आवश्यक है | अहिंदी भाषिक लोगों की हिंदी में यह लक्षित होता है | अंग्रेजी ने अपनी विविधता में सभी प्रकार की अंग्रेजी बोलनेवालों को समान रुप से सन्मानित किया है | इस प्रकार की बहुविविधता याने प्रयोजनमूलका हिंदी के रुप का स्वीकार करना चाहिए |

मनोरंजन के विभिन्न माध्यमों स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता प्राप्त करना संभव है | हिंदी फिल्मों को उंचे परिवर्तनवादी, विकासवादी दृष्टीकोण को पूरे मनोरंजन के साथ प्रस्तूत करना होगा | हिंदी के गदय, पदय अन्य विधाओं के माध्यम से प्रशसंनीय साहित्य की निर्मिती करना होगा | राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं का हिंदी अनुवाद प्रक्रिया व्दारा जुड जाना आवश्यक है |

ग्रंथालय संस्कृति का निर्माण कर हिंदी ग्रंथ अन्य देशों में उपलब्ध कराना उन देशों के हिंदी प्रेमियों के लिए एक उपलब्धि होगी | निरंतर बदलते गतिशील जीवन में हिंदी भाषा के साथ आत्मविश्वास से जुडने के लिए नये शब्दकोश निर्माण करना हिंदी का दायित्व है |

इक्कीसवी सदी सूचना प्रौद्योगिकी का युग है | विशाल ज्ञानभंडार, जो इंटरनेट के माध्यम से सभी को उपलब्ध है | उस में हिंदी को अपना योगदान करना महत्वपूर्ण होगा | कम्प्युटर तथा इंटरनेट की सहाय्यता से अविलंब सभी प्रकार की जानकारी हम प्राप्त कर सकते है | सौभाग्य की बात है कि हिंदी कम्प्युटरीकृत विकास के कारण व्यापार, उदयोग, वाणिज्य, बैंक, विज्ञान, कृषि, शासकीय दप्तर आदि में भारत अपना वर्चस्व प्रस्थापित कर रहा है | संगणक क्षेत्र में वेबसाईट व्दारा शिक्षा के सभी संदर्भो का विश्वस्तर पर संकलन हिंदी में प्राप्त कराना महत्वपूर्ण है | आकाशवाणी, दूरदर्शन, संचार, विज्ञापन, इलेक्ट्रॉनिक प्रिंट सभी का सशक्त और सक्षम योगदान अपेक्षित है | आधुनिक तकनिकी में कम्प्युटर का स्थान अहम है | कम्प्युटर

व्दारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में शीघ्र गति, कार्य की निश्चितता तथा अदभूत क्षमता प्राप्त की जात सकती है |

हिंदी भाषा की शिक्षा व्यवस्था में नया परिवर्तन लाने की आवश्यकता है | आधुनिक तकनिकी ज्ञान का उपयोग शिक्षा के अतिरिक्त बँक, रेल, डाकघर, अदालत, सरकारी दप्तर, आदि क्षेत्रों में हिंदी में ही होना निहायत जरुरी है | समकालीन नव साहित्य तथा हिंदी भाषा से जुडे देश- विदेश के उत्कृष्ट साहित्यकार, पत्र-पत्रिकाएँ तथा पत्रकारों को पुरस्कारों से सन्मानित किया जाना चाहिए |

इक्कीसवी सदी की चुनौतियों में सबसे बडी चुनौती है राजनीतिक हमारे राजनेताओं को अपने स्वार्थ-पक्ष कूपमंडूक वृत्ति को छोडकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतिक हिंदी को बढावा देना जरुरी है | साथ ही सभी राज्यों को अपनी भाषा का एवं ज्ञान अनिवार्य रुप से सिखाने की छूट देनी चाहिए | अब वक्त आ गया है कि वे अपने वोट और नोट की चिंता छोडकर देश एकता, अखंडता, विकास, अस्मिता को नजर में रखकर कठोर निर्णय लेकर एकमात्र हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा के रुप में उसके विकास के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेना चाहिए | जब तक विविध स्तरों पर लगातार हिंदी का उपयोग नहीं होगें तब तक उसका परिपूर्ण विकास संभव नहीं | आज अंग्रेजी का प्रभाव चारों तरफ बढ रहा है | हिंदी वाले भी इसके लिए जिम्मेदार है | हिंदी की रोजी-रोटी खाने वालों को हिंदी की मान, शान, बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने चाहिए | अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल की अपेक्षा हिंदी स्कूल में डालने चाहिए | हिंदी पढानेवालों को पहले अपना रवैय्या बदलना चाहिए |

इक्कीसवी सदी में हिंदी लेखन साहित्य में परिवर्तन करना यह भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है | साहित्य के सभी विधाओं में विकासवादी दृष्टीकोण लाना चाहिए | हिंदी के विकास के लिए जो कठिनाईयाँ, चुनौतियाँ सामने दिखाई देती है | समस्याओं को समझकर उसके लिए विकास के नए सूत्र ढूडना चाहिए | राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सभा, संम्मेलन, संगोष्ठी का आयोजन करके करके उस पर विचार-विर्मश करना चाहिए | अपने उद्देश तक पहुचने के लिए क्रमबध्द कार्यक्रम बनाना चाहिए | विश्व हिंदी संम्मेलन, विश्व हिंदी संघटन बनाकर देश विदेश की यात्रा करके अभ्यास, चिंतन और मनन करके निर्णायक सूत्र जुटाने होगें | हिंदी साहित्य में अच्छी पुस्तकों का सृजन बहुत कम हो रहा है | अधिकतर साहित्य अलोचना तथा समालोचना पर आधारित है | वस्तुत: हिंदी भाषा में संशोधन भी ऐसे विषय पर अधिक हो रहे है जो कालबाह्य विषय बन गए है | नये विषयों का लेखन और संशोधन होना चाहिए | देश विदेश की साहित्य का अनुवाद हिंदी में होना चाहिए | सब का साथ सब का विकास के अनुरुप हिंदी लेखन होना चाहिए |

हिंदी के सामने जो चुनौतियाँ हैं | उनके लिए हमें संघर्ष करना है | एकजूट, एकसंघ होकर संघर्ष करना है | समस्या और चुनौती के प्रति उदासिन रहना उतना ही बडा जुर्म है, जितना उसे नकारना है |

मेरी समझ में हिंदी एक ऐसी आधुनिक भाषा बन गयी है जिसमें नये शब्दों की खपत आसानी से हो सकती है और नए विचारों को बडी सरल भाषा में व्यक्त किया जा सकता हैं | इसलिए आधुनिक हिंदी भाषा के विकास के लिए संघठीत होकर कार्य करना चाहिए | तभी हम बडे शान से कह सकेंगे |

हिंदी हमारी मान है
भारत की शान है,
और हिंदी बिना,
सारा विश्व गूँगा है,
सब उन्नती के मूल जड है हिंदी |
जय हिंदी

संदर्भ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका- कैलाशनाथ पाण्डेय
2. अनुवाद चिंतन - डॉ.अर्जुन चव्हाण
3. प्रयोजन मूलक हिंदी: विविध परिदृश्य- डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी
4. मीडिया कालीन हिंदी : स्वरुप एवं संभावनाएँ - डॉ. अर्जुन चव्हाण
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता- डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह
6. प्रयोजनमूलक हिंदी: प्रासंगिकता एवं परिदृश्य - डॉ. सु. नागलक्ष्मी
7. प्रयोजनमूलक हिंदी: डॉ. विनोद गोदरे